17 अक्टूबर 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वस्तु के सहज परिणमन का ध्यान आते ही सहज शांति उत्पन्न होती है।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-34

वर्ष : 30, अंक : 14 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (द्वितीय), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

देश-विदेश में दशलक्षण महापर्व धूमधाम से मना

जैन परम्परानुसार मनाये जानेवाले सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व को सम्पूर्ण देश एवं विदेश में दिनांक 16 सितम्बर से 25 सितम्बर, 2007 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से 532 स्थानों पर विद्वान भेजे गये। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर जैनमंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

*** मुम्बई :** यहाँ सीमंधर जिनालय द्वारा इस वर्ष व्याख्यानों का आयोजन भारतीय विद्या भवन में रखा गया, जहाँ प्रतिदिन प्रात: **तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल**, जयपुर के दशलक्षण धर्मों पर हुए मार्मिक प्रवचनों को सहस्राधिक श्रोताओं ने मन्त्रमुग्ध होकर सुना।

आपके प्रवचनों के पूर्व पण्डित विपिनजी शास्त्री, श्योपुर के प्रवचन हुए। आपके प्रवचन सायंकाल सीमंधर जिनालय में ही होते थे।

इस अवसर पर डॉ.भारिल्ल के **38,517 घंटों** के सी.डी. व वी.सी.डी. कैसिट्स घर-घर पहुँचे। इसी प्रसंग पर एक हजार धर्म के दशलक्षण और एक हजार क्रमबद्धपर्याय की पुस्तकों का प्रभावना के रूप में वितरण हुआ तथा सम्पूर्ण मुम्बई में स्वाध्याय का संकल्प लेने वाले 500 साधर्मियों को समयसार (ज्ञायकभाव प्रबोधिनी टीका) स्वाध्यायार्थ भेंट स्वरूप दी गईं।

*** कोटा (राज.) :** यहाँ रामपुरा स्थित दि. जैन मंदिर में डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई, जयपुर के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्ग-प्रकाशक तथा रात्रि में दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

इसके साथ ही यहाँ क्षमावाणी दिवस के अवसर पर विद्वत् शिरोमणि बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के दो हृदयग्राही प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला तथा इन प्रवचनों की सी. डी. भी तैयार की गई है, जिसे आप कोटा से प्राप्त कर सकते हैं।

*** मोड़लिम्ब (सोलापुर-महा.) :** यहाँ ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा दोनों समय जिनधर्म प्रवेशिका की कक्षा ली गयी। इसके साथ ही तीन दिन दोपहर में शंका-समाधान हेतु विशेष कक्षा ली गयी। आपके साथ पण्डित दीपकजी मंझलेकर ने दो दिन विशेष कार्यक्रम कराये।

पर्व के अवसर पर यहाँ समयसार का सार (मराठी) का विमोचन किया गया, जिसकी 360 प्रतियाँ मोडलिम्ब के अतिरिक्त करकम्ब, परलीवइजनाथ में भी वितरित की गई। वीतराग-विज्ञान (मराठी) के अनेक नये सदस्य बने। छोटा गाँव होते हुये भी समाज ने बड़ा मंदिर एवं सांस्कृतिक भवन के निर्माण का निर्णय लिया। ज्ञातव्य है कि ब्र.जी का एक प्रवचन कुर्डूवाडी में एवं दो प्रवचन भिगवन में भी हुये।

*** उदयपुर (हिरणमगरी सैक्टर-11) :** यहाँ मुमुक्षु मण्डल के विशेष आग्रह पर जयपुर से पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा पधारे। प्रतिदिन प्रात: पूजन-विधान के उपरान्त आपके नियमसार एवं समयसार ग्रन्थ पर तथा रात्रि में दसलक्षण धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में श्री अशोकभाई द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। पर्व के उपरान्त आपका एक प्रवचन चित्तौडगढ में भी हुआ।

*** अशोकनगर (म.प्र.) :** यहाँ श्री महावीरस्वामी दि. जैन स्वाध्याय मंदिर में प्रात: पूजन एवं दसलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर के ग्रंथाधिराज समयसार के आधार से ज्ञेय-ज्ञायक एवं भाव्य भावक भाव, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि एवं रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के उपरान्त प्रवचनसार ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसी प्रसंग पर विदुषी कु. परिणति पाटील द्वारा दोपहर में द्रव्य संग्रह पर कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

*** कोलकाता :** यहाँ भवानीपुर स्थित नवनिर्मित जिनालय, पद्मोपुकुर में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रात: समयसार के सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा रात्रि में आपके द्वारा करणानुयोग पर विशेष कक्षा एवं तदुपरान्त दसलक्षण धर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। इस प्रसंग पर पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर द्वारा संगीतमय पूजन एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रमों **(शेष पृष्ठ-4 पर ...)**

सम्पादकीय –

पूजन और प्रवचन

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

वर्षाऋतु, भादों का महीना, शुक्लपक्ष की पंचमी, पर्यूषण पर्व का प्रथम दिन। मौसम एकदम सुहावना, न अधिक गर्मी, न अधिक पानी।

रिमझिम वर्षा की बूँदें पर्व के स्वागतार्थ ही मानो मोती बनकर रत्नवृष्टि कर रहीं थीं।

वैसे तो ये पर्यूषण पर्व वर्ष में ३ बार आते हैं, परन्तु भाद्रपद का यह पर्व विशेष उत्साह से मनाया जाता है; क्योंकि इन दिनों व्यापार मन्दा होने से वणिकों को सबसे अधिक फुरसत रहती है।

वर्षाऋतु के इस पर्व में साधु–सन्यासियों के चातुर्मास होने से उनके प्रवचनों का लाभ भी मिल जाता है। 'आम के आम गुठलियों के दाम' कहावत के अनुसार यह वणिक वर्ग धन कमाने की भाँति धर्म कमाने में भी चतुर होता है। अतः वह लाभ का कोई भी अवसर चूकता नहीं है।

यह पर्व न केवल जैनों का है, बल्कि जन–जन का है, सार्वजनिक है; परन्तु आजकल यह बनियों का बनकर रह गया है। यही कारण है इस पर्व को अधिकांश वणिक वर्ग ही उत्साह से मनाता है। अस्तु ः ह्न

ह्न ह्न ह्न

सूर्योदय के साथ ही जिनमन्दिरों में चहल–पहल प्रारंभ हो जाती हैं। जिनप्रतिमाओं का प्रक्षाल करने वालों की संख्या बढ़ जाती है। मानो वे इन दस दिनों में ही भगवान के बिम्बों का प्रक्षाल करके पूरे वर्षभर किए पापों का प्रक्षालन कर लेना चाहते हैं।

पूजन सामग्री के सुसज्जित थालियाँ ले–लेकर भक्तगणों के झुण्ड सामूहिक और व्यक्तिगत पूजन करने में सक्रिय हो जाते हैं। जो वर्षभर दिखाई नहीं देते, ऐसे नये–नये भदैंया भैया भी इन दस दिनों में पूजा–पाठ कर वर्षभर के लिए पुण्य का संचय कर लेना चाहते हैं, पर ऐसा होना संभव नहीं है। एतदर्थ उन्हें पुण्य–पाप का स्वरूप एवं पुण्य के संचय और पापों के विनाश करने का उपाय भली–भाँति समझना होगा, जो प्रतिदिन नियमित रूप से एक घंटा स्वाध्याय करने से ही संभव है।

यद्यपि ये भक्तजन घंटों तक अनेक पूजनें करते–करते थकते नहीं हैं। उनका वश चले तो दिनभर पूजा ही करते रहें; पर पूजन के बारे में सही समझ कुछ ही लोगों में होती हैं। अधिकांश तो देखा–देखी ही करते हैं।

पूजा क्या है, किसकी और क्यों की जाती है, पूजा करने का मूल प्रयोजन क्या है? यह न तो लोग समझते हैं और न समझना चाहते हैं।

पूजन के पश्चात् ज्यों ही प्रवचन प्रारंभ हुआ नहीं कि एक–एक करके अधिकांश भक्तजन तो खिसक ही जाते हैं। जो थोड़े से परम्परावादी व्यक्ति बचते हैं सो वे भी दीवार के सहारे टिककर बैठे–बैठे ऊँघने लगते हैं। पूजन करते–करते बिचारे थक जो जाते हैं।

ह्न ह्न ह्न

भक्तों का यह नजारा चातुर्मास कर रहे साधु संघ को अच्छा नहीं लगा। दूसरे दिन संघ के आचार्यश्री ने समाज के मुखिया को बुलाकर सूचित किया कि ह्न 'कल सामूहिक पूजन में मुनि संघ सम्मलित होगा।'

यह खबर करेन्ट की तरह सब समाज में फैल गई। सभी प्रसन्न थे; परन्तु एक भक्त को मन में प्रश्न पैदा हुआ कि मुनिराज तो स्वयं पंच परमेष्ठी में शामिल हैं। अतः वे तो स्वयं पूज्य बन गये हैं। उन्हें तो पूजन करने की जरूरत ही नहीं है। पूजन करना तो श्रावकों के षट् आवश्यक कर्मों में ही प्रथम कर्तव्य है। आगम में भी उल्लेख है कि ह्न

देवपूजा गुरुपास्ति स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट् कर्माणि दिने–दिने।।

फिर मुनि संघ पूजन में सम्मलित क्यों हो रहा है?

ह्न ह्न ह्न

पर्व के प्रथम दिन की भाँति दूसरे दिन भी सूर्योदय के साथ ही सामूहिक प्रक्षाल–पूजन प्रारंभ हुई तथा ठीक आठ बजे मुनिसंघ भी पूजन में सम्मलित हुआ। आचार्यश्री ने नित्य नियम पूजन के पूरा होते ही तथा अगली पूजन को प्रारंभ करने के पहले भक्तों का ध्यान आकर्षित करते हुए आदेश दियाह्न अब आगे पूजन प्रारंभ करने से पूर्व मुनि श्री समन्तभद्रजी पूजन के विषय में कुछ महत्वपूर्ण बातें बतायेंगे। शेष नैमित्तिक पूजनें प्रवचन के बाद होंगी।

स्थानीय परम्परा के विरुद्ध आचार्यश्री का आदेश सुनकर सब भगत सन्न रह गये। किसी की कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं हुई।

समाज के मुखिया ने साहस बटोरा और हाथ जोड़कर विनयपूर्वक निवेदन किया ह्न आचार्यश्री पूजन के बीच में प्रवचन? यहाँ तो आजतक कभी ऐसा हुआ नहीं।

आश्वस्त करते हुए आचार्यश्री ने कहा ह्न हमारे होते हुए तुम चिन्ता क्यों करते हो? कुछ अनर्थ नहीं होगा, घबराओ मत। हम बैठे हैं न! पूजन के बीच में पूजन की ही जानकारी देने से कुछ अनर्थ–मनर्थ नहीं होता, ये तो आप लोगों का कोरा भ्रम है।

हो सकता है कभी किसी ने किसी प्रसंगवश पूजन के बीच में विकथा आदि करने से रोक दिया हो। पूजन के साथ पूजन की जयमाला का अर्थ करने की परम्परा तो पुरानी है। इसमें तो ज्ञान की वृद्धि ही होगी। अनर्थ क्या होगा, अनर्थ होने का भ्रम भंग जरूर हो जायेगा, जो होना ही चाहिए।

तुम लोग जिन लौकिक कामनाओं के लक्ष्य से पूजा पाठ करते हो, अनर्थ तो उससे होता है। तुम पूजा में अपने दुःख–दर्द सुनाने के और उन्हें दूर करने की प्रार्थना करने के सिवाय और करते ही क्या हो?

तुम्हारा धर्म तो भगवान की पूजा–पाठ करने और मुनियों को आहार दे देने तक ही सीमित है। तुम तो पूजाओं में भगवान को मात्र अपना दुखोना ही सुनाते हो, उनकी तात्विक बातें सुनते ही कहाँ हो?

इन्हीं सब बातों को मुनिश्री अब समझायेंगे, उन्हें ध्यान से सुनो। आज मुनिसंघ इसीलिए यहाँ आया है। सब लोग शान्ति से मुनिश्री को सुनें !

मन में तो ऐसे विकल्प बहुतों को हुए थे। लगभग सभी आशंकित थे, भयभीत थे कि कुछ अनर्थ न हो जाय। पूजा के बीच में विघ्न जो पड़

गया है; पर मुनिसंघ के समक्ष मुँह खोलने की हिम्मत किसी की नहीं हुई।

मुनिश्री को उस दुःसाहसी मुखिया के प्रति करुणा तो बहुत आई पर धैर्य धारण कर आचार्यश्री ने उससे अधिक कुछ न कहकर मुनिश्री का प्रवचन प्रारंभ कराया।

ह्न ह्न ह्न

मुनिश्री ने एक बुढ़िया की कथा से अपना प्रवचन प्रारंभ किया। उन्होंने कहा ह्न एक थी बुढ़िया, अन्य बूढ़ों की तरह उसे बुढ़ापे की वे बीमारियाँ तो थीं ही, जिनका कोई इलाज नहीं हो सकता था; परन्तु वह कुछ दिनों से बुखार, खाँसी, सरदर्द, कमरदर्द, हाथ–पैरों की पीड़ा और छीकें आने व नाक से पानी के टपकने से बहुत परेशान थी।

कुछ दिन तक तो वह उन कष्टों को सहती रही; किन्तु जब उसका धैर्य टूटा तो उसने ठान ही लिया कि यद्यपि डॉक्टर कभी पूरी बात सुनता नहीं है; पर मैं आज अपनी पूरी व्यथा–कथा सुनाकर ही रहूँगी।

डॉक्टर बहुत लोकप्रिय था, बुद्धिमान और अनुभवी भी बहुत था। इसकारण उसके यहाँ मरीजों की लम्बी लाईन लगती थी। वह मरीजों का इलाज भी दिल से करता था, पैसे कमाने से कहीं अधिक परोपकार की भावना उसमें कूट–कूटकर भरी हुई थी।

प्रथम तो वह बुढ़िया संघर्ष करके लाईन तोड़कर डॉक्टर के बिना बुलाये ही डॉक्टर के पास पहुँच गई। इस कारण डॉक्टर को क्रोध तो बहुत आया; परन्तु उसे देखकर डॉक्टर को अपनी माँ की याद आ गई, जो कुछ दिन पहले ही चल बसी थी। अत: डॉक्टर ने उस बुढ़िया में अपनी बूढ़ी माँ का रूप देखकर उसे प्रेमपूर्वक बिठाया और पूछा ह्न ''बोल अम्मा! तुझे क्या तकलीफ है?'' अम्मा ने अपनी व्यथा–कथा कहना प्रारंभ किया तो बोलती ही गई, बोलती ही गई; जबकि डॉक्टर ने उसकी नब्ज देखते ही समझ लिया था कि ह्न इसे और कुछ नहीं है, केवल मौसम का बुखार है। इसी के कारण ये सब तकलीफें हैं।

डॉक्टर ने कहा ह्न ''अम्मा ! मैं समझ गया?''

बुढ़िया बोली ह्न ''बेटा? तू बिना कुछ कहे ही सब कैसे समझ गया? अभी तू कुछ नहीं समझा। अभी मैंने बताया ही क्या है। सुन! मेरे सिर में ... पेट में ... पैरों में ... कमर में भयंकर दर्द है असह्यवेदना है। ''इस तरह बिना सांस लिए एक ही बात को बार–बार सुनाये ही जा रही थी। तब डॉक्टर ने कहा ह्न ''मैं तेरे मुँह से ये सब बातें अनेक बार सुन चुका हूँ। माँ मैं सब समझ गया। अब तू ही बोलती रहेगी कि कुछ मेरी भी सुनेगी? मेरी बात सुने बिना और दवा खाये बिना तेरा दर्द कैसे दूर होगा?''

इसी बीच उस अम्मा को याद आया कि अरे ! दूध तो सिगड़ी पर ही छोड़ आयी, वह उफन गया होगा, कुछ देर में सब जल जायेगा।

फिर क्या था अम्मा ने कहा ह्न बेटा ! अभी मेरे पास तुम्हारी बात सुनने का समय नहीं है, मैं कल आऊँगी। फिर अपनी बाकी बातें बताऊँगी।

डॉक्टर ने माथा ठोक लिया ह्न अभी तक पाँच मरीज निपटते। अब ये कल फिर आयेगी और इसी तरह अपना दुखोना फिर रोयेगी।

डॉक्टर कुछ कहते; उसके पहले ही वह उठकर चल दी।

दूसरे दिन फिर आ धमकी और उसी प्रकार लाईन तोड़कर फिर अन्दर पहुँच गई और लगी अपनी व्यथा कथा सुनाने।

ऐसा एक दो दिन नहीं, जब कई दिन ऐसा हुआ तो डॉक्टर ने उसके हाथ जोड़े, पैर पड़े और कम्पोउंडर से कहा ह्न इसे बाहर बिठाओ और जब एक भी मरीज न रहे तब अन्दर आने देना।

ह्न ह्न ह्न

मुनिश्री ने इस कथा के माध्यम से कहा ह्न ''ये भक्त लोग भी उस बुढ़िया से किंचित् भी कम नहीं हैं। भगवान के सामने आदिनाथ भगवान की पूजा की जयमाला में रोज–रोज एक ही बात कहते हैं कि ह्न

ऊँट–बलद–भैंसा भयो, तापै लदियो भार अपार हो।
चलत–चलत जँह गिर पड़्यो, पापी दे सोटन की मार हो।।

जब भगवान आदिनाथ उस भक्त की वह दुःखद कथा सुनकर उसको उन दुःखों से बचने का उपाय बताने की बात करते हैं, तभी उस भक्त को दुकान के ग्राहकों की याद आ जाती, माता–बहिनों को सिगड़ी पर रखे दूध की याद आ जाती और न जाने क्या–क्या विकल्प आ जाते हैं और जल्दी–जल्दी पूजा में अपने दुःखों का रोना रोकर चल देता है।

यह बात एक दो दिन की नहीं है, बल्कि ये भक्त वर्षों से यही रोना रोता आ रहे हैं और भगवान के बताये उपाय करना तो दूर उनके बताये उपाय सुनते भी नहीं हैं। तो इन भक्तों के दुःख दूर कैसे होंगे?''

मुनिश्री ने उसी से एक प्रश्न किया, जिसने मुनिराज को पूजन के बीच में प्रवचन करने का दबी जबान से विरोध किया था।

मुनिश्री ने पूछा ! बताओ मुखिया महोदय ! पूजन और प्रवचन में क्या अन्तर है?

प्रश्न सुनकर सब सकपका गये, अवाक रह गये। मुखिया की बोलती भी बंद थी। तब मुनि श्री ने कहा ह्न अरे भाई ! पूजन में हम भगवान से कुछ कहते हैं? और प्रवचन में जिनवाणी के माध्यम से भगवान हम से कुछ कहते हैं। यही तो दोनों में मूल अन्तर है। तथा पूजन में हम प्रतिदिन उसी बात को दुहराते हैं और प्रवचन में हमें नित्य नई–नई बातें सुनने–समझने का मौका मिलता है। पूजन में हम भगवान से ऐसा क्या कहते हैं, जो भगवान को पहले से पता नहीं है। अरे ! वे तो सर्वज्ञ हैं, तुम जो भी कहना चाहते हो, वे उसे पहले से ही जानते हैं।

एक बात और है, वे भले ही तुम्हारे दिल की सब बातें जानते हैं, पर करते कुछ नहीं हैं; क्योंकि वे एक तो वीतरागी हो गये हैं। दूसरे, वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्त के अनुसार अनंतबल के धनी होते हुए भी वे पर में कुछ कर ही नहीं सकते, करते ही नहीं हैं। अतः उनसे कहने से भी क्या होगा?

अपना दिल हल्का करने के लिए और भक्तिवश होकर भक्तों को कुछ कहना पड़े तो भले कहें; परन्तु अपनी कहो कम और उनकी सुनो अधिक। उन्होंने जिनवाणी में जो दुःख दूर करने के उपाय बताये हैं, उन्हें स्वयं पढ़ो गुरुओं से सुनो। इसी में भगवान की विनय हैं, भक्ति है। भगवान की वाणी सुनने से अधिक बहुमान भगवान का होगा?

जरा सोचो और कल से जितनी भी पूजायें करो; समझ–समझ कर करो तथा प्रवचन को भी पूजन से कम मत समझो, बल्कि पूजन से अधिक महत्व प्रवचन का है, इसे गाँठ बाँध कर रखो।'' ॐ नमः। ●

(पृष्ठ–1 का शेष, पर्व समाचार ...)

का सुंदर आयोजन हुआ। तीन दिन पण्डित पंकजजी शास्त्री ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर कक्षा ली तथा द्रोणगिरि पंचकल्याणक का आमंत्रण देने पधारे पण्डित विरागजी शास्त्री के एक प्रवचन का लाभ भी समाज को मिला। पर्व के प्रसंग पर मुमुक्षु मण्डल की ओर से पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 31 हजार रुपये की सहयोग राशि प्रदान की गई। ह्न हर्षद भाई

*** पीसांगन (राज.) :** यहाँ पण्डित अभिनन्दनजी शास्त्री, खनियांधाना द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन किये गये।

इसके साथ ही यहाँ आपके निर्देशन में पण्डित सुरेशजी काले एवं पण्डित दीपकजी, भिण्ड द्वारा कल्पद्रुम मण्डल विधान का आयोजन किया गया तथा जिनेन्द्रभक्ति के साथ–साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये एवं पण्डितजी ने बंद पड़ी हुई पाठशाला को पुन: चलाने हेतु समाज को प्रोत्साहित किया।

*** जबलपुर (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित प्रदीपजी झांझरी, उज्जैन के प्रात:कालीन सभा में प्रवचनसार गाथा 200 पर मार्मिक प्रवचन हुए तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर चर्चा हुई साथ ही अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न कराये गये। इसी दौरान सत्साहित्य व प्रवचनों के कैसेट पर 25 प्रतिशत की छूट भी रखी गई थी।

*** भागलपुर (बिहार) :** यहाँ पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के प्रात: चम्पापुर सिद्धक्षेत्र पर विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हुए। आपके ही द्वारा दोपहर में भागलपुर में तत्त्वार्थसूत्र व सांयकाल दशधर्मों पर सरल शैली में प्रवचन हुये। रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

अनन्त चतुर्दशी को भगवान वासुपूज्य का निर्वाणोत्सव हर्षोल्लास से मनाया। कार्यक्रमों में श्री सुनीलजी पाण्ड्या का सक्रिय सहयोग रहा।

*** खड़ैरी (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर के प्रात: पूजन के पश्चात बारह–भावनाओं पर सारगर्भित प्रवचन हुए, इसके अतिरिक्त दोपहर में चौबीस तीर्थंकर विधान के उपरान्त आपके द्वारा ही पंचपरावर्तन विषय पर कक्षा ली गई तथा रात्रि में गुणस्थान विवेचन की कक्षा ली गई। प्रवचनोपरान्त स्थानीय विद्वान राजेन्द्रजी, भानुजी, मनोजजी एवं चैतन्यजी शास्त्री ने सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये।

*** सागर (म.प्र.) :** यहाँ महावीर जिनालय में पण्डित अरहंतजी झांझरी उज्जैन के प्रात: समयसार कलश तथा रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुए। आपके साथ ही आपकी धर्मपत्नी द्वारा भी बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

यहाँ पण्डित सुनीलजी 'धवल' द्वारा भक्ति–गीतों सहित पूजन–विधान के अतिरिक्त तत्त्वार्थसूत्र की सारगर्भित कक्षा भी ली गई।

*** साधनानगर ह्न इन्दौर (म.प्र) :** यहाँ श्री पंच बालयति विहरमान बीस तीर्थंकर जिनालय में डॉ. दीपकजी जैन, जयपुर के प्रात: पंचास्तिकाय ग्रंथ पर प्रवचन हुए साथ ही दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं नियमसार की कक्षा ली गई तथा रात्रि में भी उनके ही द्वारा दशधर्मों पर किये गये प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

*** सेलू (महा.) :** यहाँ पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल के प्रात: पूजन के उपरान्त क्रमबद्धपर्याय विषय पर ओजस्वी प्रवचन हुये। दोपहर में समयसार के आधार से सैंतालीस शक्तियों की एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई। रात्रि में जिनेन्द्र–भक्ति के पश्चात् दशधर्मों पर प्रवचन हुए एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

*** कुराबड़ ह्न उदयपुर (राज.) :** यहाँ पण्डित वीरेन्द्रजी 'वीर', फिरोजाबाद के दशधर्मों पर हुए विवेचन का लाभ समाज को मिला। रात्रि में भी आपके ही द्वारा परमात्मप्रकाश एवं पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रंथ पर प्रवचन किये गये तथा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। इसी अवसर पर आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोजलता जैन द्वारा भी पूजन प्रशिक्षण दिया गया तथा बालकक्षा ली गई साथ ही कुछ समय से बंद पाठशाला को पुनर्जीवित किया गया।

*** छिन्दवाड़ा (म.प्र.) :** यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर एवं श्री पार्श्वनाथ जिनालय में दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर प्रात: पण्डित विमलचंदजी झांझरी, उज्जैन के नियमसार ग्रंथ पर प्रवचन हुए, दोपहर में शंका–समाधान का आयोजन किया गया। रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुए।

इसी अवसर पर ब्र. समता बहन ने छहढाला एवं निमित्तोपादान पर कक्षा ली। अंतिम दिन पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित विवेक जी जैन की उपस्थिति में क्षमावाणी पर्व मनाया गया।

*** नागपुर (महा.) :** यहाँ विदुषी राजकुमारी बेन जयपुर के प्रात: संवर अधिकार, दोपहर में षट् लेश्या एवं रात्रि में जैसी गति वैसी मति विषय पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन दोपहर में पण्डित कांतिजी इन्दौर एवं पण्डित मनीषजी सिद्धान्त के सान्निध्य में समयसार विधान का आयोजन हुआ। पर्व के उपरान्त दो दिन की मुक्तागिरि यात्रा के मध्य भातकुली में 'मेरे जीवन में धर्म की शुरुआत कैसे ?' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

*** लूणदा (राज.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित सुनीलजी नाके, निम्बाहेड़ा के प्रात: पूजन के उपरान्त समयसार, दोपहर में बालकक्षा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुए। इसके साथ ही जिनेन्द्र–भक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न कराये गये तथा क्षमावाणी पर्व पर विशाल शोभायात्रा का भी आयेजन किया गया। समस्त कार्यक्रमों में चंद्रप्रकाशजी भादावत एवं सुनीलजी केरोत का सक्रिय सहयोग मिला।

*** पुरुलिया (पं.बंगाल) :** यहाँ पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर के सान्निध्य में प्रात: पूजन–विधान का आयोजन किया गया। दोपहर में छहढाला एवं पूजन क्या, क्यों, कैसे ? विषय पर कक्षा ली गई। रात्री में दसलक्षण धर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। विदुषी श्रीमती सीमाजी द्वारा बालकों की कक्षा ली गई तथा प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। पण्डितजी के सान्निध्य में यहाँ नवीन पाठशाला का शुभारंभ हुआ।

*** लुधियाना (पंजाब) :** यहाँ पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा द्वारा श्री राजकुमारजी जैन बरगी के सहयोग से दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन किया गया। दोनों समय पण्डित निखिलजी के प्रवचन

हुए। इसके साथ ही जिनेन्द्र–भक्ति, बालकक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। ज्ञातव्य है कि लुधियाना में इस तरह का आयोजन प्रथम बार ही किया गया था।

*** शामलाजी का उण्डा (डूंगरपुर) :** यहाँ पण्डित श्रीपालजी जैन घाटोल द्वारा दशधर्मों पर आध्यात्मिक प्रवचन किये गये। इसके साथ ही दिन में तत्त्वार्थसूत्र एवं छहढाला की कक्षा ली गई। इसी अवसर पर बालकक्षा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

*** खड़गपुर (प.बंगाल) :** यहाँ जबेरा से पधारे पण्डित कमलकुमारजी जैन के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं सायंकाल रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये। दोपहर में आपके ही द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा ली गई। रात्रि में विविध धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

*** अमरोहा :** यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर में प्रात: सामूहिक पूजन के पश्चात् पण्डित विमलकुमारजी जैन जलेसर के तत्त्वार्थसूत्र, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में जिनेन्द्र–भक्ति के उपरान्त दशधर्म पर हृदयग्राही प्रवचन हुए।रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

*** कुरावली (मैनपुरी–उ.प्र.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर श्री आदिनाथ जिनालय में ललितपुर से पधारे पण्डित गोकुलचन्दजी 'सरोज' द्वारा दशधर्मों पर प्रवचन हुए एवं कक्षाऐं ली गईं। यहीं पर आपके निर्देशन में पण्डित निखिलजी द्वारा जिनेन्द्र–भक्ति, बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

*** घाटकोपर (मुम्बई) :** यहाँ पर्व के दौरान डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें अध्याय पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुए। इसी अवसर पर यहाँ दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन भी किया गया। पर्व के मध्य में तीन दिन पण्डित पंकजजी दहातोंडे द्वारा रत्नकरण्डश्रावकाचार पर कक्षा ली गई। एक दिन द्रोणगिरि पंचकल्याणक का आमंत्रण देने आये पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के प्रवचन का लाभ मिला।

इसी प्रसंग पर डॉ. बंसल को स्थानीय समाज द्वारा 'धर्मरत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

*** मंदसौर (म.प्र.) :** यहाँ अरथूना से पधारे पण्डित संजयजी शाह 'शास्त्री' के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रत्नकरण्डश्रावकाचार तथा रात्रि में तत्त्वार्थसूत्र पर हुए प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

*** हरदा (म.प्र.) :** यहाँ श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में विदुषी कुसुमलताजी के तीनों समय हुए आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। इसके साथ ही उनके निर्देशन में जिनेन्द्र–पूजन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये। इस अवसर पर 1100 रूपये की राशि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को प्राप्त हुई।

*** लश्कर (ग्वालियर–म.प्र.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन स्वर्ण मंदिर में पर्व के दौरान स्थानीय विद्वान पण्डित नेमीचंदजी जैन के ज्ञान एवं वैराग्यप्रद प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

*** अकोला (महा.) :** यहाँ पण्डित सुबोधजी जैन, सिवनी के प्रात: छहढाला की कक्षा के पश्चात् दशधर्मों पर हुए प्रवचन, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा एवं रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार पर हुए प्रवचनों का लाभ मिला साथ ही अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न कराये गये। आपके प्रयत्नों से नवीन पाठशाला का भी गठन किया गया है।

*** कैराना (उ. प्र.) :** यहाँ दशलक्षण पर्व के प्रसंग पर पण्डित अंकितजी लूणदा एवं पण्डित संदीपजी पाटील के निर्देशन में इन्द्रध्वज मंडल विधान का आयोजन किया गया। प्रात: छहढाला की कक्षा, दोपहर में बालकक्षा एवं रात्रि में जिनेन्द्र–भक्ति के उपरान्त दशधर्मों पर प्रवचन हुए। अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

*** गढ़ाकोटा (म. प्र.) :** यहाँ स्थानीय विद्वान पण्डित सौरभजी शास्त्री के प्रात: पुरुषार्थसिद्धयुपाय एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुए। अंतिम दिन क्षमावाणी पर्व हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

*** बनियानी (राज.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर समवशरण मंडल विधान का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, ढिग्सर के प्रारंभिक तीन दिनों तक दोनों समय दशधर्मों पर हुए प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

*** अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री सीमन्धर जिनालय प्रांगण में महापर्व के प्रसंग पर दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन किया गया इस अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्ग–प्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर हुए आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। विधि–विधान के समस्त कार्यक्रम श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया एवं मेघाजी लुहाड़िया के निर्देशन में पण्डित विजयजी शास्त्री मोड़ी द्वारा सम्पन्न कराये गये।

इस अवसर पर सभी श्रावक–श्राविकाओं को ट्रस्टी श्रीमती आशा लुहाड़िया द्वारा जिनवाणी भेंट की गई।

*** बून्दी (राज.)** : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित भँवरलालजी के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

*** बैंगलोर (कर्ना.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन समाज विल्सन गार्डन में पण्डित समकितजी शास्त्री, सिलवानी द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा दोपहर में शंका समाधान हेतु विशेष कक्षा एवं रात्रि में जिनेन्द्रभक्ति के उपरान्त दशधर्मों पर प्रवचन किये गये। रात्रि में प्रवचन के पश्चात प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

*** मुम्बई (वसई रोड़) :** यहाँ पण्डित वीरेन्द्रजी शास्त्री, बक्सवाहा द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर चर्चा की गई। आपके द्वारा ही यहाँ पर बालकक्षा ली गई एवं अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

*** ग्वालियर (म. प्र.) :** यहाँ श्री दिगम्बर जैन सीमन्धर जिनालय में मुजफ्फरनगर से पधारे पण्डित प्रफुल्लकुमारजी जैन द्वारा प्रात: समयसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक तथा रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन किये गये।

*** इटावा (राज.) :** यहाँ मन्दिरजी में प्रात:दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधानोपरान्त पण्डित अनुरागजी शास्त्री के विभिन्न विषयों पर प्रवचन एवं रात्रि में दशधर्मों पर हुए प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। रात्रि में कार्यक्रम कराये गये। **ह्न चेतन पाटनी**

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 16

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

दश दिशाओं की जीवनपर्यंत के लिए मर्यादा निश्चित कर लेना और उस सीमा के बाहर कभी नहीं जाना दिग्व्रत है। चार दिशायें, चार विदिशायें और ऊपर व नीचे ह्न ये दस दिशायें हैं।

उत्तर में हिमालय, दक्षिण में कन्याकुमारी, पूर्व में मणिपुर और पश्चिम में द्वारिका आदि दशों दिशाओं की मर्यादा सुनिश्चित कर लेना और उसके आगे जीवनपर्यन्त नहीं जाना दिग्व्रत है। जीवनपर्यंत के लिये की गई दिग्व्रत की मर्यादा में काल की सीमा बाँधकर दस दिशाओं में क्षेत्र को और अधिक सीमित करते जाना देशव्रत है।

दिग्व्रत में सम्पूर्ण भारतवर्ष के बाहर न जाने की प्रतिज्ञा जीवनपर्यंत के लिये की थी; अब देशव्रत में एक वर्ष तक राजस्थान के बाहर नहीं जाऊँगा, एक माह तक जयपुर जिले के बाहर नहीं जाऊँगा, एक दिन तक अपने मुहल्ला के बाहर नहीं जाऊँगा और एक घंटे तक मंदिर के बाहर नहीं जाऊँगा ह्न इसप्रकार मर्यादा को घटाते जाना देशव्रत है।

दिग्व्रत और देशव्रत लेने का प्रयोजन यह है कि इसकी मर्यादा के बाहर होनेवाले पाँच पापों में हमारी भागीदारी नहीं होगी तो हमारे ये अणुव्रत सीमा के बाहर महाव्रत जैसे हो जायेंगे; पर ध्यान रहे इसके कारण हम महाव्रती नहीं हो सकते; क्योंकि महाव्रती होने के लिये प्रत्याख्यानावरण कषाय का अभाव होना जरूरी है; जो गृहस्थ अवस्था में संभव नहीं है।

तीसरा गुणव्रत है अनर्थदण्डव्रत। अर्थ माने प्रयोजन और अनर्थ माने बिना प्रयोजन। दण्ड माने हिंसादि पाँच पाप। व्रत माने त्याग। इसप्रकार अनर्थदण्डव्रत का अर्थ हुआ बिना प्रयोजन पाँच पापों का त्याग।

ये अनर्थदण्डव्रत पाँच प्रकार के होते हैं ह्न १. अपध्यान, २. पापोपदेश, ३. प्रमादचर्या, ४. हिंसादान और ५. दु:श्रुति।

किसी की धनहानि, किसी की जीत, किसी की हार हो जावे ह्न इसप्रकार चिन्तन अपध्यान नाम का अनर्थदण्ड है और इसका त्याग करना अपध्यानत्याग नामक अनर्थदण्डव्रत है।

ऐसे व्यापार और कृषि आदि कार्य, जिनके करने में बहुत हिंसादि पाप उत्पन्न होते हैं; उन्हें करने के लिए उपदेश देकर प्रेरित करना पापोपदेश नामक अनर्थदण्ड है और इसका त्याग पापोपदेशत्याग नामक अनर्थदण्डव्रत है।

प्रमाद के वश होकर भूमि, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति रूप एकेन्द्रिय जीवों की विराधना करना प्रमादचर्या नामक अनर्थदण्ड है और इनकी विराधना नहीं करने का व्रत लेना प्रमाचर्या नामक अनर्थदण्डव्रत है।

जो वस्तुयें हिंसादि पापों में ही काम आती हों, उन वस्तुओं का दान देना हिंसादान नामक अनर्थदण्ड है और उन वस्तुओं का दान न करने का व्रत लेना हिंसादान नामक अनर्थदण्डव्रत है।

जिस कथा–वार्ता–चर्चा में राग–द्वेष पैदा होते हों; उनकी चर्चा करना दु:श्रुति नामक अनर्थदण्ड है और इसप्रकार की कथा, चर्चा–वार्ता नहीं करने का व्रत लेना दु:श्रुतित्याग नामक अनर्थदण्डव्रत है।

अब संक्षेप में चार शिक्षाव्रतों की चर्चा करते हैं ह्न

धर उर समता भाव, सदा सामायिक करिये।
परव चतुष्टय माहिं, पाप तज प्रोषध धरिये।।
भोग और उपभोग, नियम करि ममत निवारै।
मुनि को भोजन देय, फेर निज करहिं अहारै।।

हृदय में समताभाव धारण करके सदा सामायिक करे, दो अष्टमी और दो चतुर्दशी ह्न इसप्रकार चार पर्वों में पापों को छोड़कर प्रोषधोपवास करे, एक बार भोगने में आनेवाले भोग और बारंबार भोगने में आनेवाले उपभोग पदार्थों की सीमा बाँधकर उनसे ममत्व का निवारण करे और मुनिराजों को आहार देकर फिर स्वयं आहार करे ह्न ये चार शिक्षाव्रत हैं।

इन चार शिक्षाव्रतों के नाम क्रमश: इसप्रकार हैं ह्न १. सामायिक, २. प्रोषधोपवास, ३. भोगोपभोगपरिमाणव्रत और अतिथिसंविभाग।

आत्मचिन्तन और आत्मध्यानरूप होने से सामायिक तो सर्वोत्कृष्ट धर्म है। इसी सामायिक व्रत की साधना के लिये प्रोषधोप–वास किया जाता है। जिन अहिंसक भोगोपभोग की वस्तुओं का त्याग नहीं है; उनमें भी सीमा तो सुनिश्चित करना ही चाहिये; क्योंकि उनका भी असीम भोग तो उचित नहीं है।

अतिथि कहते ही उसे हैं, जिसके आने की कोई तिथि निश्चित न हो। मुख्यरूप से महाव्रती मुनिराज ही वास्तविक अतिथि हैं, अणुव्रती श्रावक भी इनमें ही आते हैं। तो शुद्ध–सात्विक भोगोपभोग सामग्री हमने अपने लिए संग्रहीत की है, बनाई है; उसमें से ही एक सुनिश्चित भाग अतिथियों को देना अतिथिसंविभागव्रत है।

ये व्रत मुनिव्रत धारण करने की शिक्षा देते हैं; इसलिए शिक्षाव्रत हैं।

अन्त में इन व्रतों का फल बताते हुये कहते हैं ह्न

बारह व्रत के अतिचार, पन पन न लगावै।
मरण समय संन्यास धारि, तसु दोष नशावै।।
यों श्रावक व्रत पाल, स्वर्ग सोलम उपजावै।
तहँ तैं चय नर जन्म पाय, मुनि ह्वै शिव जावै।।

उक्त बारह व्रतों में प्रत्येक व्रत के पाँच–पाँच अतिचार होते हैं; उन्हें भी न लगने दे और मृत्यु का समय नजदीक आने पर संन्यास (समाधिमरण–सल्लेखना) धारण करके उस संन्यासव्रत का भी निरतिचार पालन करे। इसप्रकार व्रती श्रावक इन बारह व्रतों का पालन करके सोलहवें स्वर्ग में उत्पन्न होता है और वहाँ से चयकर मनुष्य भव पाकर, मुनि होकर मोक्ष चला जाता है। ●

पटाखा विरोधी पोस्टर मंगायें

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन और अ. भा. जैन युवा फैडरेशन, जबलपुर द्वारा दीपावली पर पटाखों से होने वाली हिंसा और अन्य हानियों से अवगत कराने हेतु एक रंगीन पोस्टर एवं फ्लैक्स भी प्रकाशित किये हैं। आपसे निवेदन है कि अपनी आवश्यकतानुसार पोस्टर और फ्लेक्स मंगाकर दुकानों, सार्वजनिक स्थानों, विद्यालयों आदि स्थानों पर लगाकर जीवों की रक्षा में निमित्त बनें। 100 या इससे अधिक पोस्टर के आर्डर पर आपकी भावनानुसार नीचे नाम प्रकाशित किया जायेगा। प्रति पोस्टर 4/–रू. एवं प्रति फ्लैक्स 100/–रू. (3 x 2 फुट) मूल्य निर्धारित किया गया है। **ह्न विराग शास्त्री,** 702, जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर

महापर्व में प्रभावना

दशलक्षण महापर्व के पावन अवसर पर दिव्यध्वनि प्रचार–प्रसार ट्रस्ट, मुम्बई की धर्मप्रचार एवं ज्ञानदान योजना के अन्तर्गत ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित जैन बाल साहित्य की बालकों में अपूर्व प्रभावना की गई। इस हेतु दानवीरों ने निम्नलिखितरूप से सहयोग दिया :– **(1)** सेठ श्री महेन्द्रभाई डाहयालाल शाह बोरिवली, मुम्बई के परिजनों की ओर से बाल सहित्य के 155 सेट बालको में प्रभावना हेतु वितरित किये गये। **(2)** कम मूल्य पर बाल साहित्य उपलब्ध कराने हेतु श्रीमती सुप्रिया पितेश मेहता वाल्केश्वर रोड़, मुम्बई की ओर से 5000 रूपये तथा श्री मांगीलालजी जैन जोगेश्वरी, मुम्बई की ओर से 4000 रूपये प्राप्त हुये। महापर्व के अवसर पर 60,000/–रुपये का बाल साहित्य घर–घर पहुँचा।

ह्न अविनाश टडैया, प्रकाशन मंत्री

सम्पादक सम्मेलन अब 13 नवम्बर को...

अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के तत्त्वावधान में आयोजित द्वितीय जैन पत्र सम्पादक सम्मेलन अब 13 नवम्बर,07 को चौरासी मथुरा में होगा। पहले इस आयोजन की तिथि 11 नवम्बर घोषित की गई थी; परन्तु भाई दोज की तिथि होने से यह परिवर्तन किया गया है। **ह्न अखिल बंसल**

वैराग्य समाचार

जबलपुर (रांझी) निवासी श्री प्रेमचन्दजी जैन का 88 वर्ष की आयु में दिनांक 8 अक्टूबर, 07 को शान्त परिणामों सहित देहावसान हो गया। आप पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के ताऊजी थे।

आपने मोराजी विद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी। आपमें बचपन से ही स्वाध्याय के प्रति विशेष रुचि थी। सोनगढ़ तथा जयपुर में आयोजित होने वाले शिविरों में आप नियमित रूप से उपस्थित रहते थे। आपके पूरे परिवार में धार्मिक रुचि आपकी ही प्रेरणा से है।आपकी स्मृति में जैनपथ प्रदर्शक व वीतराग–विज्ञान को कुल 500/– रुपये प्राप्त हुए हैं।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो – यही कामना है।

दिल्ली में अपूर्व धर्म प्रभावना

देश की राजधानी दिल्ली में दशलक्षण महापर्व के अवसर पर 'अध्यात्म तीर्थ' आत्म साधना केन्द्र के तत्त्वावधान में लगभग 38 स्थानों पर 46 विद्वानों के द्वारा धर्म–प्रभावना हुई। दिल्ली के कोने–कोने में हुई अपूर्व धर्म प्रभावना को अतिसंक्षेप में यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

आत्म साधना केन्द्र : यहाँ पं. प्रयंकजी शास्त्री एवं पं. अमितजी शास्त्री के निर्देशन में दशलक्षण विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पं. शांतिलालजी सोगानी महिदपुर एवं पं. जयकुमारजी बाँरा के तीनों समय हुए प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। पं. स्वतंत्रजी शास्त्री फुटेरा एवं पं. सुरेन्द्रजी शास्त्री शाहगढ़ का समस्त कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग रहा।

शिवाजी पार्क में पण्डित कस्तूरचंदजी भोपाल, **मयूर विहार** में पं. राकेशजी शास्त्री, **बैंक एंक्लेव–लक्ष्मीनगर** में पं. अमितजी जैन शाहदरा, **पटपड़गंज** में पं. स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, **दिलशाद गार्डन** में पं. अंचलजी शास्त्री ललितपुर, **पार्श्वविहार** में पं. ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, **पाण्डव नगर** में पं. आशीषजी शास्त्री मौ, **न्यू उस्मानपुर** में पं. विकासजी शास्त्री बानपुर, **अशोक नगर** में पं. नीरजजी दिलशाद गार्डन एवं पं. जयप्रकाशजी शास्त्री साहिबाबाद, **बी–1, जनकपुरी** में पं. सचिनजी शास्त्री बरेली, **बी–2, जनकपुरी** में पं. मनीषजी शास्त्री बरेली, **सरस्वती विहार** में पं. संदीपजी शास्त्री बाँसवाड़ा, **केशवपुरम्** में पं. निपुणजी शास्त्री टीकमगढ़, **दिल्ली केन्ट** में पं. चैतन्यजी शास्त्री खड़ैरी, **पालम गांव** में पं. राकेशजी शास्त्री लिधौरा, **पीरागढ़ी चौक** में पं. सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा, **पुष्पांजली एंक्लेव** में पं. संदीपजी शास्त्री गोहद, **रोहिणी–15** में पं. श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, **राजा बाजार** में पं. मयंकजी शास्त्री ध्रुवधाम, **पहाड़गंज** में पं. नितिनजी शास्त्री विदिशा, **चांदनी चौक** में पं. सतेन्द्र मोहनजी जैन, **राजेन्द्र नगर** में पं. अश्विनजी शास्त्री बाँसवाड़ा, **सीताराम बाजार** में पं. समकितजी शास्त्री ध्रुवधाम, **शक्ति नगर** में पं. संजीवजी जैन उस्मानपुर, **रोहतक रोड़** में डॉ. वीरसागरजी जैन, **आर्यपुरा** में पं. विकासजी जैन नवीन शाहदरा, **मॉडल बस्ती** में पं. जितेन्द्रजी शास्त्री दिल्ली, **गोविन्दपुरी** में पं. संजीवजी जैन उस्मानपुर, **सैनिक फॉर्म** में पं. अशोकजी शास्त्री राघोगढ़, **बदरपुर** में पं. वीरेन्द्रजी शास्त्री बरां, **ग्रीनपार्क** में पं. अशोकजी शास्त्री, **विकासपुरी** में पं. अविरलजी शास्त्री, **वसंतकुन्ज** में डॉ. सुदीपजी जैन एवं पं. आदित्यजी शास्त्री खुरई, **तुगलकाबाद एक्स.** में पं. नीरजजी शास्त्री खड़ैरी, **द्वारका** में पं. पंकजजी शास्त्री बंडा, **बिनोली (उ. प्र.)** में पं. राजेन्द्रजी टीकमगढ़ एवं पं. नवीनजी शास्त्री, **फरीदाबाद (हरियाणा)** में पं. शौर्यजी शास्त्री ध्रुवधाम के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि सभी विद्वान पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से भेजे गये। दिनांक 26 सितम्बर को आत्मसाधना केन्द्र में उक्त सभी 45 विद्वानों के सान्निध्य में सामूहिक क्षमावाणी का आयोजन किया गया। तत्त्वप्रचार–प्रसार में टोडरमल स्मारक के इस सहयोग हेतु आत्मार्थी ट्रस्ट ने अत्यन्त आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर 'आत्मार्थी जैन डायरेक्टरी' का विमोचन किया गया। सभा का संचालन पण्डित संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा ने तथा अतिथियों का आभार प्रदर्शन श्री पृथ्वीचन्दजी जैन ने किया। **– सुमति सेठिया**

17 अक्टूबर 2007, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री के उद्गार ...

एक रूपये की पुस्तक चार पैसे में..

''हमने तो किसी से नहीं कहा कि कमेटी का कुछ करो, तीर्थक्षेत्र का कुछ करो; हमने तो यह भी नहीं कहा कि मन्दिर बनवाओ। बहुतों ने हमसे कहा, फिर भी हमने तो यही कहा कि शास्त्रों की कीमत कम से कम रखो कि जिससे शास्त्र लोगों के पास पहुँच सकें।

क्रिश्चियन लोग तो एक रुपये की पुस्तक चार पैसे में देते हैं। अरे भाई ! अभी तो सत्शास्त्र के प्रचार करने का समय है; अत: जितना हो सके सत्शास्त्रों का प्रचार-प्रसार करो।''

ह्न समयसार शक्ति अधिकार पर हुये प्रवचन से साभार, सी.डी.नं. SS 23, प्रवचन क्रमांक 565, शक्ति नं. 10 से 41

तत्त्वप्रचार की नई कड़ी : पत्राचार पाठ्यक्रम

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड का पंचवर्षीय पाठ्यक्रम जो श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर में प्रवेश प्राप्त छात्र नियमित पढ़ते हैं ह्न उसी पाठ्यक्रम का घर बैठे अध्ययन कर जो परीक्षा देना चाहते हैं अथवा अन्य विषयों की भी जो परीक्षा देना चाहते हैं, उनके लिए पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट **पत्राचार-पाठ्यक्रम** प्रारंभ करने जा रहा है। इनमें (1) द्विवर्षीय विशारद परीक्षा (2) त्रिवर्षीय सिद्धान्त शास्त्री परीक्षा एवं (3) एक वर्षीय विषय विशारद परीक्षा प्रमुख हैं।

इसकी विस्तृत नियमावली एवं सत्र 2007-08 के लिए प्रवेश फॉर्म प्राप्त करने हेतु स्वयं का पूरा पता लिखा एवं 5/- का डाक-टिकट लगा लिफाफा निम्नलिखित पते पर भेजें। **-पीयूष जैन/धर्मेन्द्र शास्त्री**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

आगामी कार्यक्रम ...

द्रोणगिरि पंचकल्याणक : तैयारियां जोरों पर

सागर : यहाँ परकोटा स्थित महावीर जिनालय में दिनांक 28 से 30 अक्टूबर,07 तक पंचपरमेष्ठी विधान एवं शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित कोमलचन्दजी जैन टडावालों के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिलेगा।

इसी प्रसंग पर द्रोणगिरी में दिनांक 5 फरवरी से 11 फरवरी, 08 तक होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु इन्द्र-इन्द्राणी, राजा-रानी आदि अनेक पात्रों का चयन भी किया जायेगा। इच्छित महानुभाव इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिये प्रतिष्ठा महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री गुलाब सेठ से (09425170989) सम्पर्क करें।

ज्ञातव्य है कि सिद्धायतन (द्रोणिगिरी) स्थित मंदिर का निर्माण पूर्ण हो चुका है एवं मानस्तम्भ व समवशरण जिनालय का कार्य भी द्रुत गति से पूर्णता की ओर है।

साहित्य नि:शुल्क मंगायें

सभी ब्रह्मचारी/त्यागी-व्रतियों को उनके निजी स्वाध्याय के लिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट एवं उनकी सहयोगी संस्थाओं द्वारा हमारे यहाँ से प्रकाशित साहित्य एक साधर्मी भाई की ओर से भेंट स्वरूप दिया जा रहा है। एतदर्थ जो भी भाई साहित्य मंगाना चाहते हैं; वे निम्न पते पर स्वयं का पता लिखा 5 रुपये की टिकिट लगा लिफाफा भेजें, उन्हें इस योजना के अन्तर्गत उपलब्ध साहित्य की सूची भेजेंगे। वे उस सूची में जिस-जिस ग्रन्थ पर निशान लगाकर भेजेंगे। वह उन्हें नि:शुल्क भेजा जायेगा। ध्यान रहे ! साहित्य सूची मंगाने की अंतिम तिथि 30 नवम्बर, 2007 है।

ह्न डॉ. दीपक जैन

सी-115, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर - 302015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७